वहाबी मत का सत्य

लेखक :– आयतुल्लाहिल उज़मा सय्यदुल उलमा मौलाना सै0 अली नक़ी नक़वी

किस्त : 5 **सम्पादन : नूरे हिदायत फाउन्डेशन**

मुल्ला अलीकारी ने शरहे षिफ़ा के दूसरे भाग में लिखा है किः

"हम्बलियों में से इब्ने तैयमिया ने कमी घटती से काम लिया कि रसूल[स] की जियारत के लिए यात्रा को हराम ठहराया जिस तरह दूसरों ने अति से काम लिया कि उन्होंने कहा कि ज़ियारत का इबादत में दाख़िल होना धर्म की ज़रुरतों में है और इसके मना करने वाले पर कुफ़्र का हुक्म लगता है और यह दूसरा विचार सच से अधिक पास है इसलिए कि जिस चीज के मुस्तहब (धर्म में वान्छनीय) होने पर उलमा एक मत हो उसका हराम कहना कुफ़्र होगा इसलिए कि यह इससे ऊपर है कि किसी ऐसी चीज़ कि जो एक मत से मुबाह हो, उसे हराम कहा जाए जिसके कुफ़्र होने पर इत्तेफ़ाक़ (एका) है।"

'कष्फ़ुज़्ज़ुनून' में है कि उलमा ने इब्ने तैयमिया के बारे में बड़ी अति से काम लिया है कि यहाँ तक लिख दिया किः

"जो व्यक्ति इब्ने तैयमिया को शेखउलइसलाम (इस्लसम का उत्कृष्ट) कहे वह भी काफ़िर है।"

इन लिखी हुई बातों से मालूम हुआ कि बहुत से उलमा इब्ने तैमिया के कुफ़्र पर उसके इस कथन के कारण एकमत हैं।

शैख इब्ने हजर ने 'दुर्रुकामिना' में लिखा है किः

"लोग इब्ने तैयमिया के बारे में कई किस्म के हैं। कुछ तो उसे मुजस्सिमूइन (अल्लाह के लिए शरीर मानने वालों) में गिनते हैं क्योंकि 'अकीदा हमविया' और 'वासितीया' आदि में लिखा है कि हाथ और पैर और पिन्डली और मुख सब यतार्थ में अल्लाह के लिए हैं। और 'वह स्वयं अर्ष पर बैठा हुआ है कहा कि इस से स्थान विशेष में होना और उसका अंगों में बटा होना अनिवार्य (जरूरी) है; तो कहा हम यह नहीं मानते कि किसी स्थान विशेष में होना और अंग होना शरीर की निषानी है तो कहा गया कि बहरहाल यह व्यक्ति खुदा को "ला मकान" (स्थान और आयतन रहित) नहीं मानता और उसके लिए स्थान को अंश मानता है।

और कुछ लोग उसे इसलिए बेदीन (अधर्मी) मानते है कि उसका यह कहना है कि पैग़म्बर[स] से फ़रियाद (गुहार) नहीं की जा सकती। इसमें रसूल[स0] में दोष त्रुटि निकालना और आप के आदर सत्कार से रोकना है कुछ लोग इसे इसलिए मुनाफ़िक़ (ऊपर से कहने को मुसलमान मगर दिल से काफ़िर) कहते हैं क्योंकि इसने हज़रत अली[अ] के बारे के बारे में कहा कि उन्होंने जिधर का रुख़ किया उधर असफल और निकम्मे रहे, उन्होंने कई दफा ख़िलाफ़त पाने का प्रयास किया मगर नहीं पा सके और उन्होंने सारे युद्ध अपनी राजसत्ता के लिए लड़े न कि धर्म के लिए, वह सत्ता के लिए आकाक्षी थे। और उस्मान दुनिया के माल के बड़े प्रेमी थे। इसी प्रकार उसका यह भी कहना था कि अबुबक्र बूढ़े थे (न) समझते थे क्या कह रहे हैं अली[अ0 स0] बचपन में ईमान लाए और बच्चे का इस्लाम कुबूल नहीं हो सकता। और जबकि पैग़म्बर की हदीस है कि ऐ अली तुम्हें कोई दुष्मन नहीं रखेगा मगर मुनफ़िक़। कुछ लोग यह कहते हैं कि यह आदमी उम्मत समुदाय/समाज का इमाम अगुवा/धर्म प्रमुख बनने का सपनाा देखता इसलिए वह वहाँ इब्ने तूमर की बहुत चर्चा और सराहना करता था। इन्हीं बातों के कारण वह लम्बी अवधि तक क़ैद

में रखा गया। इस बारे में जब बाद में उसे समझाया जाता था तो कहता था कि मेरा मतलब यह नहीं था बल्कि दूसरा था और बहुत दूर का अर्थ बयान कर देता था।

इन तमाम उलमा के कथन से यह साबित हो गया कि रसूल[स०] की ज़ियारत को जाना सारे मुसलमानों के एके और एकमत से एक बेहतरीन अमल है और जो इसे नकारे उसने दीन की एक महत्वपूर्ण चीज़ का इन्कार किया।

तवस्सुल की चर्चा

तवस्सुल का अर्थ है रसूल[स०] के माध्यम से अल्लाह के यहाँ। इसके लिए कुरआन मजीद में भी सबूत हैं और बहुत सी हादीसें भी हैं और सहाबियों (रसूल[स०] के साथी) व ताबिईन (रसूल[स०] साथियों के साथी) के कार्य भी हैं और फिर तबे ताबिईन (ताबिईन के साथी) और (रसूल[स०] के साथियों के साथी) इस्लाम का समुदाय भी है जिनमें से हर एक बारी–बारी से लिखा गया है।

कुरान मजीद से तवस्सुल का सबूत

रसूल[स०] से बात करते हुए कुरान मजीद में अल्लाह ने फरमाया है कि "क्यों नहीं ऐसा हुआ कि जब उन्होंने पापों के करने से अपने ऊपर अत्याचार /अन्याय किया था तो वह आपके पास आते और आकर अल्लाह से क्षमा मांगते और रसूल उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करते तो अल्लाह को क्षमा करने वाला दयावान पाते।" (आयत) प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि अगर पैग़म्बर[स] से तवस्सुल/माध्यम चाहना न होता तो फिर स्वयं उनका क्षमा मांगना ही पर्याप्त था। यह हुक्म न दिया जाता कि वह रसूल[स] के पास आऐं और आपके पास आकर क्षमा याचना करें और इसकी आवष्यकता न होती कि रसूल[स०] उनके लिए प्रार्थना करें। यह बात साफ है कि अल्लाह स्वयं "तव्वाबुररहीम" (तौबा/पाश्चाताप क़बूल करने वाला दयानिधान) है मगर यहाँ उसने स्वयं तव्वाबुररहीम होने को इस शर्त के साथ बान्ध दिया है। इससे बढ़ कर तवस्सुल के लिए और क्या सबूत हो सकता है?

हदीसों और सहाबियों का चलन

1. जनाबे आदम[अ] का तवस्सुल

इसका वर्णन बहुत सी हदीसों में है। उनमें से एक वह है जिसे हाकिम ने 'मुसतदरक' में लिखा है और उसे सही ठहराया है कि जब हज़रत आदम[अ] से "तरके औला" (वह काम जिसका न करना अच्छा है।) हो गया तो उन्होंने कहा पालनहार! मैं तुझसे मुहम्मद मुस्तफा[स०] के हक़ का वास्ता देकर प्रार्थना करता हूँ कि तू मुझे क्षमा कर दे। अल्लाह ने कहा कि ऐ आदम! तुमने उन्हें किस प्रकार पहचाना? आदम[अ० स०] इस कारण कि जब तूने मुझे बनाया तो मैंने अर्ष पर निगाह डाली तो उसमें लिखा हुआ देखा "ला इला ह इल्लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुललाह" उनका नाम मैंने तेरे नाम के साथ देखा तो समझा कि वह तुझे सबसे अधिक प्यारे हैं।

2. स्वयं रसूल अल्लाह का तवस्सुल

तबरानी की रवायत है 'मुअ़जमे कबीर' और 'मुअ़जमे औसत' में और इब्ने हय्यान 'मुअजमे और हाकिम ने सही होने की पुष्टि के साथ अनस बिन मालिक की ज़बानी लिखा है कि जब फ़ातिमा बिन्ते असद रज़ी अल्लाह तआला अनहा की वफात (देहान्त) हुई जिन्होंने हज़रत रसूल[स०] का पालन पोषण किया। तो हज़रत उनके सरहाने बैठे और कहा ''अल्लाह की कृपा हो आप पर हर समय ऐ मेरी माँ के बाद मेरी माँ''। इसके बाद जब क़ब्र बनाने का समय आया तो आपने अपने हाथ से उसे खोदा और उसकी मिट्टी अपने हाथ से निकाली और जब क़ब्र तैयार हो गई तो आप उसमें लेटे और कहा "अल्लाह जो जीवन देता है और मृत्यु देता है और स्वयं जीवित है इस तरह कि उसे मृत्यु नहीं आ सकती। पालनहार! मेरी माँ फ़ातिमा बिन्ते असद को क्षमा कर, और उनके स्थान को फैला दे बढ़ा दे। तुझे वास्ता है अपने पैग़म्बर[स] का और उन पैग़म्बरों का जो मुझसे पहले थे "तू बहुत करूणामय और दयावान है

और सबसे अधिक कृपा करने वाला है।" और इब्ने अबी शैबा ने ऐसी ही रिवायत जाबिर की ज़बानी लिखी है और इसी प्रकार इब्ने अब्दुल बर ने इब्ने अब्बास से और अबू नईम ने 'हिलयतुल औलिया' में अनस द्वारा। इन सब रिवायतों की चर्चा हाफ़िज़ जलालुद्दीन सुयूती ने "जामए कबीर" में की है।

यह तो खुली बात है कि हज़रत[स] को तवस्सुल की आवष्यकता नहीं थी मगर अपनी उम्मत को इस प्रकार से मांगने के लिए सिखाना था।

3. रसूल[स०] के माध्यम से जनाब अबूतालिब[अ०] का वर्षा के लिए प्रार्थना करना

रसूल के चचा हज़रत अबूतालिब ने हज़रत[स] को साथ ले जाकर वर्षा के लिए प्रार्थना की उसी समय वर्षा हो गई इस पर उन्होंने एक क़सीदा (प्रशंस्ति काव्य) कहा जिसके दो शेरों का आशय इस प्रकार हैं:

"वह गोरा चिट्टा जिसके मुख के द्वारा बादल से वर्षा मिलती है। वह अनाथों का आश्रय और विधवाओं का रक्षक है। आश्रय लेते है उसकी ओर बनी हाशिम (हाशिम के) के दुखी लोग तो वह उसके पास उपकारों में घिरे रहते हैं।"

इन पंक्तियों को हज़रत[स] ने इतना अधिक पसन्द किया कि इन शेरों को और उनके रचयिता अबूतालिब[अ०] को याद किया जिसे हाफ़िज जलालुद्दीन सुयूती ने 'खसाइसे कुबरा' में लिखा है।

4. हज़रत[स०] का वर्षा के लिऐ प्रार्थना करने पर एक कवि के शेर

सुयूती ने स्वयं हज़रत[स] का वर्षा के लिए प्रार्थना करने के बाद वर्षा होने के बारे में लिखा है कि कनाना (क़बीले कुल) के कवि ने इस बारे में शेर पढ़े वह सुयूती ने लिखे हैं। इनमें से उस कवि ने जनाबे अबूतालिब के शेरों का भी हवाला दिया है और कहा है कि पैग़म्बर के मुख के द्वारा हमें वर्षा मिलती है और वह वैसे ही साबित हुए जैसा कि उनके चचा ने उनके बारे में कहा था। हज़रत[स०] ने उस कवि की प्रषंसा की और इस प्रकार उसके इन शब्दों का सत्यापन किया। कि पैग़म्बर[स०] के मुख के कारण हमें वर्षा मिली।

5. एक अन्धे को रसूल[स] की शिक्षा

बुख़ारी ने अपनी तारीख (इतिहास) में और बैहिक़ी ने 'दलाइल' में सही बताते हुए और अबू नईम ने किताब 'अलमारिफ़त' में उस्मान बिन हुनैफ़ से रिवायत की है कि एक अन्धा हज़रत[स] के पास आकर कहने लगा कि

'अल्लाह से प्रार्थना कीजिए कि वह मुझे दृष्टि दे आप[स] ने कहाः चाहो तो धैर्य रखो और प्रार्थना न करो और चाहो तो प्रार्थना कर दूँ।

इब्ने माजा की रवायत में यूँ है कि चाहो तो अल्लाह से प्रार्थना करूँ और चाहो तो धैर्य रखो कि वह तुम्हारे लिए अच्छा है।

मगर उसने कहा आप मेरे लिए प्रार्थना कीजिए। हज़रत[स] ने कहा: अच्छा तो फिर ठीक से वजू करो फिर दो रकत नमाज़ पढ़ो और इसके बाद इन शब्दों से प्रार्थना करो कि "पालनहार! तुझसे मांगता हूँ और तेरी ओर ध्यान करता हूँ तेरे पैग़म्बर मुहम्मद[स] के द्वारा जो कृपा के पैग़म्बर हैं और ऐ मुहम्मद[स] मैंने आपके माध्यम से अल्लाह की ओर ध्यान किया कि वह मेरी इस इच्छा को पूरा करे। पालनहार! तू उनकी सिफ़ारिष को मेरे बारे में कबूल कर ले। जब उस व्यक्ति ने ऐसा किया तो उसको दृष्टि प्राप्त हुई।

6. सवाद बिन क़ारिब के शेर

तबरानी ने मुअजमऐ कबीर में सवाद बिन कारिब की बीती लिखी है। उसमें है कि उन्होंने पैग़म्बर[स] के सामने अपना क़सीदा पढ़ा। उसमें था कि "पैग़म्बरों आप का माध्यम (निकट) अल्लाह के यहाँ सबसे अधिक निकट है और फिर यह कि आप[स] मेरी सिफ़ारिष कीजिए। इनमें से किसी बात को भी हज़रत ने आपत्ति नहीं की।

7. प्रथम ख़लीफ़ा अबुबक्र का तवस्सुल

शरह (व्याख्या) दलाइलुलख़ैरात में हज़रत

अबूबक्र के बारे में लिखा है कि वह हज़रत[स] की पाक कब्र पर आए और कहाः "ऐ मुहम्मद मैं आपसे तवस्सुल करता हूँ (माध्यम चाहता हूँ)।"

8. उम्मुल मोमिनीन आइशा का तवस्सुल

इमादुद्दीन आमरी की किताब "बहजतुल महाफिल" में है कि मदीना वासियों पर एक बार बहुत भयानक अकाल पड़ा तो उन्होंने जनाब आइषा से षिकायत की।

उन्होंने कहाः "हज़रत[स] की पवित्र क़ब्र की छत में एक मोखा कर दो कि उसके और आसमान के बीच कोई चीज़ आड़ न हो। लोगों ने ऐसा ही किया तो बहुत वर्षा हुई जानवर और पेड़ पौधे सब पर इससे बहुत अच्छा असर पड़ा।

9. द्वितीय खलीफ़ा उमर का तवस्सुल

हाफ़िज़ अबू नईम इस्फहानी ने "दलाइलुनबूवत" में अनस की ज़बानी लिखा है कि हज़रत उमर वर्षा के लिए प्रार्थना करने के लिए निकले और अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के द्वारा वर्षा के लिए प्रार्थना करते हुए कहाः

"पालनहार! पहले जब सूखा पड़ता था तो हम तेरे पैग़म्बर से तवस्सुल करते थे और अब हम अपने पैग़म्बर के चचा द्वारा तुझसे प्रार्थना करते हैं कि हम पर वर्षा कर।" इसके बाद वर्षा हुई। इसको जाहिज़ ने "अलबयान वत्तब्ईन" में दो जगह लिखने के बाद लिखा है कि

क़ाअब अल अहबार ने हज़रत उमर से कहा कि बनी इस्राइल पर जब सूखा पड़ता था तो वह पैग़म्बरों के पैत्रिक सम्बन्धियों द्वारा वर्षा के लिए प्रार्थना करते थे। उनके इस कहने पर हज़रत उमर ने जनाबे अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के द्वारा वर्षा की प्रार्थना की।



बजुज़ इसके नबी का नामे नामी ले के क्या कहिये
इधर कहिये मुहम्मद और उधर सल्ले अला कहिये
हमारा रहनुमा वह मुरसले महबूबे दावर है
जिसे हक़ तक रसाई का मुकम्मल वास्ता कहिये

जनाब सै0 रज़ा मुहम्मद नक़वी 'रज़ा' जाएसी

शरफ़ मेरा रहेगा कब तक

ख़तीबे अकबर लिसानुश शुअरा
मौलाना सै० औलाद हुसैन नक़वी
'शायर' इज्तेहादी

डेढ़ सौ साल से यकसाँ समर अफ़शां है यह बाग़
बज़्मो साक़ी तो बदलते रहे बदला न अयाग़।

न दबे अपने परायों से कभी अपने दमाग़
रौशनी लेते रहे मेरे चराग़ों से चराग़।

यह भी कह दूं कि शरफ़ मेरा रहेगा कब तक
आये आवाज़े ''बिला फ़स्ल'' अज़ाँ में जब तक।



हम्द व नअत

'नदल' हिन्दी

हम्दे खुदा किया करो इसमें बड़ा सवाब है
नअते नबी पढ़ा करो इसमें बड़ा सवाब है
उलफ़ते आले फ़तेमा अज्रे रसूले पाक है
अज्रे नबी अदा करो इसमें बड़ा सवाब है
सबसे बड़े रसूल हैं सबसे बड़े इमाम हैं
इनकी बहुत सना करो इसमें बड़ा सवाब है
अपने ही वास्ते दुआ करने में क्या भलाई है
सबके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है
सच्चे बनो यही तो है उल्फ़ते सादिको नबी
झूट से बस बचा करो इसमें बड़ा सवाब है
झूटों से मूँह को मोड़ लो सच्चों के साथ चल पडो
सच है किधर पता करो इसमें बड़ा सवाब है
मुल्ला है हक़ बयानी से आज 'नदा' जो मुनहरिफ़
उसके लिए दुआ करो इसमें बड़ा सवाब है